विचार बिन्दु

सच्चा गुरु अनुभव है। –स्वामी विवेकानंद

'अग्निपथ' सर्वथा उपयोगी योजना है

जो भी योजना केन्द्र व राज्य सरकारें लागू करना चाहती हैं उनकी मंशा सामान्यतया अच्छी ही होती है, क्योंकि कोई भी सरकार जनता की कोपभाजन नहीं बनना चाहती। सत्ता में रहने के लिये वह लोकप्रिय भी रहना ही चाहेगी। कमियाँ रहती हैं तो उसकी क्रियान्विति में। कुछ योजनाएँ तो ऐसी होती हैं जो सतह पर बड़ी मीठी लगती हैं परंतु जिनका दूरगामी परिणाम सुखद नहीं होता। उदाहरण के लिए मुफ्त सेवाएँ और मुफ्त वस्तुएँ देने की योजनाएँ। देश में मुफ्त क्या कुछ पैदा हो सकता है? नहीं। और यदि सरकारें सब कुछ मुफ्त लुटाती रहें तो देश का बजट ही गड़बड़ा जायगा या फिर करदाताओं पर अधिक टेक्स लगेगा। कुल मिला कर व्यापार जगत तो पुनः सामान्य जनता से ही वसूली कर टेक्स का पुनर्भरण करेगा। हम में से प्रत्येक को अपनी-अपनी सेवा, अपने-अपने परिश्रम व उद्यम से ही कुछ पाने का प्रयास करना चाहिये।

हमारे परिश्रम, हमारे उद्यम, हमारी सेवाओं की गुणात्मकता में निरन्तर वृद्धि का भी प्रयास रहना चाहिये। हो यह रहा है कि सामान्य नागरिक की यह भावना बनती चली जा रही है कि कम से कम काम करो और अधिक से अधिक वसूल करो। हमारे सत्ताधारियों ने मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, कई सब्सिडी, मनरेगा कई ऋण और उनकी माफी, मुफ्त नकद राशि जैसी कई योजनाएँ चलाकर भी जनता में आलस्य, कामचोरी, अकर्मण्यता व बेईमानी सिखाये हैं।

विपक्ष ने तो हर योजना को नकारा ही है और यही नहीं घोर हिंसात्मक आंदोलन भी किये हैं और कराये हैं, भले ही उनकी सरकारों में भी ऐसी योजनाएँ बनी हों परंतु लागू न हो पाई हों। इस विरोध का आधार तो केवल स्वार्थ और सत्ता प्राप्ति का प्रयास है। लेकिन जब कुछ बुद्धिजीवी इसका विरोध करते हैं तो क्या वे योजना का गहराई से अध्ययन करके विरोध करते हैं या मात्र सतही जानकारी और क्षणिक भावावेश के कारण करते हैं। कृषि विधेयक को काला कानून कहने वाले राजनेता व बुद्धिजीवियों की कमी नहीं है, भले ही उन्होंने उसका आद्योपांत अध्ययन न किया हो। यही हाल शिक्षा नीति व अन्य सुधारों का है। इसका प्रमाण यह है कि कोई यह नहीं बताता कि उनमें खराबी क्या है। बस उसे वापिस ले लो का नारा एक-दूसरे को देखकर लगाते रहते हैं।

पहले तो हमें यह समझना होगा कि प्रत्येक योजना पर राजनेता, आलाअधिकारी व संबंधित विभाग के उच्चतम अधिकारी विचार-विमर्श करते हैं। वहाँ कोई सामान्य मज़दूर, कारीगर और मिस्त्री नहीं बैठते। उनका हानि-लाभ, लोकहित या अहित देखा जाता है। सत्ता के वोट बैंक को और जनता की संभावित प्रतिक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है। अग्निपथ योजना में उच्चतम व शीर्ष राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी व सेना के जनरल आदि सहयोगी रहे हैं। विश्व के अन्य देशों की परम्पराओं और रीति-नीति का भी अध्ययन किया जाता है। वहाँ जनता से मज़ाक कहाने वाले शेखचिल्ली और जोकर नहीं बैठे हैं। परंतु जब विरोध ही उद्देश्य हो तो फिर कुछ भी कहा जा सकता है।

केवल एक बात को पकड़ कर बैठ गये कि चार साल बाद क्या होगा? ज़रा सोचिये एक विज्ञापन आता है सेना में भरती का जिसमें चार साल का कोर्स है और उसकी फीस चार लाख रु प्रति वर्ष है। क्या प्रवेश हेतु लोग घर और खेत नहीं बेचेंगे। हाँ, यह कोर्स भर्ती की परीक्षा हेतु है भर्ती की गारंटी हेतु नहीं। छोड़िये सेना को, सिविल सेवाओं की बात करें। वर्षों तक तैयारी, पढ़ाई, अंधाधुंध व्यय होता है। आइ.आइ.टी. व मेडिकल हेतु भी लाखों बच्चे लाखों रुपये खर्च करते हैं। क्या सबका आइ.आइ.टी., आइ.आइ.एम. तथा मेडिकल में प्रवेश हो जाता है? शिक्षक बनने के लिये वर्षों से छात्र तैयारी कर रहे हैं, करते हैं, और सफल नहीं हो पाते। पूर्व सत्ताओं के जमाने से कई वकील, इंजीनियर, डॉक्टर, कई अन्य सुशिक्षित व शिक्षक के पात्र ऑटो चला रहे हैं, मेहनत-मज़दूरी कर रहे हैं, अपने प्रशिक्षण एवं शिक्षण से इतर काम कर रहे हैं। इस योजना में तो शत प्रतिशत चयित अभ्यार्थियों को चार साल गहन प्रशिक्षण एवं अनुशासन में रह कर रोज़गार भी मिलेगा। इन सैन्य प्रशिक्षितों में से सभी सेनाओं एवं उनके अंगों यथा स्थल, जल व नभ सेना में स्थायी नियुक्ति मिलेगी और उसके बाद शेष अर्द्ध सैन्य बल व पुलिस में खपेंगे। चार वर्ष बाद एक प्रशिक्षित सैन्य शक्ति तैयार होगी जो सेना तथा अर्द्ध सैन्य बल के अलावा सिविल सेवाओं के लिये भी सुरक्षित भंडार का काम करेगा। यह योजना सांप्रदायिक हिंसा, पत्थरबाजी, आंतकवाद आदि को जन बल, जन शक्ति बना कर रोक सकेगी। धीरे-धीरे युवा शक्ति गहन सैन्य प्रशिक्षण से सुसज्जित होकर देश की रक्षा हेतु किसी आपात स्थिति हेतु तैयार रहेगी। अमेरिका में ड्राफ्ट योजना प्रचलित रही और हर युवा अपनी शिक्षा के बाद अनिवार्य रूप से सैन्य प्रशिक्षण में रह कर ही आगे अपने भविष्य का निर्माण करता था। इज़रायल में हर युवक व युवती सैन्य प्रशिक्षण से फौलाद हैं, टेक्सी व ट्रेक्टर भी चलाते हैं?

युवाओं का जीवन बन रहा है, बिगड़ नहीं रहा। मुक्त गगन उनके स्वागत में खड़ा है, उन्हें खुले मुक्त, स्वच्छंद होकर आकाश में उड़ान भरने दीजिये, अपनी सफलताओं का आलिंगन करने दीजिये। गर्व से कहिये, "मैं 'अग्निपथ योजना' का समर्थन करता हूँ, अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो, बढ़े चलो।"

हमारे यहाँ हर जगह दादागिरी व पट्टागिरी की परम्परा चल पड़ी है। राजनीति में पीढ़ी दर पीढ़ी पट्टा रहे। नौकरी में परिश्रम न करना पड़े। बस सरकारी नौकरी मिल जाये, उसका पट्टा मिल जाये, फिर काम तभी करें जब कुछ ऊपरी कमाई का जुगाड़ हो। क्या किसी भी निजी उद्योग में स्थायित्व अनिवार्य है? सरकारी पट्टा कितने लोगों को मिल पाता हे। क्या गैर सरकारी नौकरी, व्यवसाय, उद्योग वाले लोग जीते नहीं हैं? फिर ऐसा क्या हुआ कि सारे देश को जलाया गया? बसों, रेलों, थानों व सत्ता पक्ष के राजनेताओं पर आक्रमण किया गया उन्हें जलाया गया, नष्ट किया गया। क्या यही युवा शक्ति है जो सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा करेगी? क्या ये कोचिंग सेंटरों और विपक्षी राजनेताओं के बहकावे में आये? क्या इनमें से अधिकांश विपक्ष के कार्यकर्ता नहीं हैं? अगर ये हैं और यदि नहीं भी हैं तो कतई सेना में भर्ती के योग्य नहीं हैं। इनसे शपथ पत्र भरवाया जाना उचित है कि ये हिंसा में लिप्त नहीं थे। और कोई झूठा शपथ पत्र पाया जाय तो इतनी कड़ी सज़ा दी जाय कि नज़ीर बन जाय।

लेखक स्वयं चार वर्ष तक एन.सी.सी. के सघन प्रशिक्षण में रहा है। बटालियन से 'सी' सर्टिफिकेट में प्रथम रहा। सीधे कमीशन के योग्य था परंतु विवाहित हो जाने से नहीं जा सका। क्या इससे जीवन रुक गया? वह डॉक्टर बनना चाहता था, वह भी नहीं हो सका। क्या इससे सारे रास्ते बंद हो गये?

21-23 वर्ष तक यूँ ही मान लीजिये कि शिक्षण-प्रशिक्षण चलता रहा और अंतिम चार वर्ष देश सेवा का गौरव मिला तथा रोज़गार का भी। उसके बाद भी सरकार के अनेक रास्ते खुले हैं और जीवन के अनेक गैर सरकारी दरवाज़ों में प्रवेश हेतु सरकार उन्हें तन, मन, धन से सशक्त बना कर ही मैदान में छोड़ेगी। युवाओं को भ्रमित मत करिये, भ्रमित होकर भ्रम न फैलाइये। युवाओं का जीवन बन रहा है, बिगड़ नहीं रहा। मुक्त गगन उनके स्वागत में खड़ा है, उन्हें खुले मुक्त, स्वच्छंद होकर आकाश में उड़ान भरने दीजिये, अपनी सफलताओं का आलिंगन करने दीजिये। गर्व से कहिये, "मैं 'अग्निपथ योजना' का समर्थन करता हूँ, अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो, बढ़े चलो।"

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

भरो होय सो रीतियो, रीतो होय भराय

डॉ रामावतार शर्मा

नए भारत में इतिहासकारों को अपशब्द कहने की एक नई परंपरा स्थापित हुई है और वह भी ज्यादातर उन लोगों द्वारा जिन्होंने जीवन में कभी गंभीर साहित्य का कोई सार्थक अध्ययन नहीं किया है। पर ध्यान रहे कि इतिहासकार तथ्यों पर आधारित बात ही सामने रखेगा। इसीलिए इतिहास चुभता है और इतिहासकार आरोपित होता है पर फिर भी लिखने का साहस करता है।

बात 1723 से 1775 के बीच की है जब आज के नेपाल के एक भाग को गोरखा राज्य कहा जाता था और इस छोटी सी रियासत का राजा था पृथ्वी नारायण शाह । वह एक महत्वाकांक्षी राजा था जिसने पड़ोसी राज्य काठमांडू, पाटन और भडगांव पर अधिकार जमा कर एक बड़ा राज्य स्थापित किया था। आगे चलकर उसने हिमालय की तराई वाले भागों पर अधिकार किया, शिवालिक पर्वत श्रृंखला, कुमाऊं, गढ़वाल, शिमला, सिक्किम का कुछ भाग, तिब्बत की कई वादियां अपने आधिपत्य में करते हुए पंजाब की सीमा तक एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया। पृथ्वी नारायण शाह की मृत्यु के कोई पांच साल बाद गुजरांवाला के सरदार महासिंह सुकरचकिया के यहां रणजीत सिंह का जन्म हुआ।

उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक काल में गोरखा और सिख दोनों ही अपनी शक्ति के शिखर पर थे। रणजीत सिंह के समय कांगड़ा में कटोच राजपूत संसार चंद का राज था। संसार चंद ने होशियारपुर पर अधिकार जमाने की कोशिश की तो रणजीत सिंह से बुरी तरह परास्त होकर सिख साम्राज्य के सामंत बन कर रहना पड़ा।

उधर पृथ्वी नारायण थापा की मृत्यु के बाद उसकी जगह अमर सिंह थापा नेपाल का राजा बना। उसने चंबा, नूरपुर, कोटला जसरोटा, मण्डी और कुल्लू आदि पर अधिकार जमाते हुए सतलुज नदी पर कब्जा जमाने की कोशिश की। संसार चंद जब घिर गया तो कांगड़ा किला रणजीत सिंह को उपहार में देकर थापा से अपनी रक्षा करवाई।

गणेश घाटी में चले लंबे युद्ध में रणजीत सिंह ने थापा की सेना का रसद मार्ग बाधित कर दिया। भूख और प्यास से प्रताड़ित गोरखा सेना को रणजीत सिंह ने एक सुरक्षित मार्ग से वापस नेपाल जाने दिया क्योंकि सिख इन बहादुर सैनिकों को मारना नहीं चाहते थे। इस बात का आगे चल कर सिख साम्राज्य को बड़ा फायदा हुआ जब गोरखा रणजीत सिंह की सेना के अभिन्न अंग बने, कई युद्धों में उनको विजय दिलवाई। चूंकि रणजीत सिंह की राजधानी लाहौर थी तो नेपाल में ये सिपाही 'लहुरिया' कहलाए।

आगे चल कर 1814-16 में अंग्रेजों और गोरखा लोगों का युद्ध हुआ और फिर 1846 और 1848-49 में अंग्रेजों एवम् सिखों के बीच युद्ध होने के फलस्वरूप भारत के इन हिस्सों में अंग्रेजों का राज स्थापित हो गया। अंग्रेजों ने भी सिख और गोरखा सैनिकों की बहादुरी का सम्मान करते हुए दोनों ही जगह बड़ी हिंसा नहीं की, दोनों को अपनी सेना में विशेष सम्मान के साथ शामिल किया। गोरखा आज भी ब्रिटेन की सेना का गर्व हैं । अब यह जानना रोचक हो सकता है कि आगे चलकर इन तीनों के वंशजों का क्या हुआ। कांगड़ा के राजा संसार चंद कोटोच के पुत्र महज एक संकेतात्मक राजा ही बने रहे जब तक भारत आजाद नहीं हुआ। थापा लोग समय की मिट्टी में कब कहां अपना महत्व खो बैठे इसमें अब किसी की कोई रुचि नहीं है। महाबली रणजीत सिंह के पुत्र दिलीप सिंह पेरिस के एक निम्न स्तरीय होटल में कंगाली से जूझते मृत पाए गए। ये उदाहरण बताते हैं कि आज जिनकी दुंदुभी बज रही होती है कल वो सन्नाटे में गुम भी हो सकते हैं।

सत्ता का नशा विचित्र होता है लेकिन सत्ता में हवा का रुख बदलने का दावा करने वाले खुद हवा हो जाते हैं। आज हम भारत में राजनीति के अग्रणी परिवारों को गुमनामी में जाते देख रहे हैं। सत्ता एवं धन के शिखर पर खड़े लोग आलोचकों को बर्दाश्त नहीं करते है और प्रताड़ित करते हैं। ऐसा होता रहा है और आगे भी होता ही रहेगा। अनुभव इसी तरफ तो इशारा करता रहता है। संत कबीर ने क्या खूब कहा है:–

'भरो होय सो रीतियों, रीतो होय भराय।
रीतो भरो न जानियो, अनुभव सो ही कहाय'।।

डॉ रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

भरतपुर में रथयात्रा को खींचने के लिए श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ा

भरतपुर, (निसं) । भरतपुर में कोविड के दो साल बाद शुक्रवार को उड़ीसा की जगन्नाथ रथयात्रा की तर्ज पर शहर के मुख्य बाजारों से होते हुए रथयात्रा निकाली गई । ठाकुरजी के लिए मोगरा के फूलों का रथ सजाया गया जिसमें भगवान श्री जगन्नाथ जी विराजकर शहर भ्रमण को निकले। इस अवसर पर मंदिर में फूलबंगला झांकी सजाई गई । रथ यात्रा में शहनाई, बैंडबाजों, ढ ोल नगाड़े की धुन पर झांकियां निकाली गई । भगवान श्रीजगन्नाथ की रथयात्रा के दौरान श्रद्धालु नाचते गाते चल रहे थे। तो वहीं समिति की ओर से श्रद्धालुओं को खिचडी का प्रसाद वितरित किया गया ।

भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा को खींचने के लिए श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। रथयात्रा को खीचने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। रथयात्रा का संचालन किला बांके बिहारी मंदिर प्रबंधन की ओर से किया गया । रथयात्रा बिहारीजी मंदिर से प्रारंभ होकर शहर के गोपालगढ़ , मथुरा गेट, चौबुर्जा, कोतवाली, वासन गेट होते हुए नई मंडी पर समाप्त हुई।

रथयात्रा का लोगो ने आरती उतारकर और प्रसाद लगाकर स्वागत किया। भगवान श्री जगन्नाथ जी की एक झलक पाने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ बाजारों में जमा रही। जैसे ही भगवान श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा सामने पहुंची तो लोग श्री जगन्नाथ जी की आरती उतारने के लिए आतुर रहे और रथयात्रा को खींचने के लिए आगे पहुंचे। तो वहीं बाजारों में भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा में चलने वाले श्रद्धालुओं को मीठे जलपान, आइसक्रीम, मिठाई, शर्बत आम, शिकंजी, तरह तरह के सुल्पाहार दिए।

भगवान श्री जगन्नाथ जी के शहर भ्रमण के दौरान भीड़ उमड़ी।

इस अवसर पर जगह -जगह भी भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा समिति द्वारा अग्रवाल धर्मशाला खिरनी घाट कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें पंचामृत अभिषेक होगा तथा 56 भोग की झांकी सजाई गई तथा वृंदावन की मंडली द्वारा संकीर्तन किया गया। बाद में दाल, भात प्रसादी का वितरण किया गया।

बीकानेर के युवक को फ्रांस का साहित्य आलोचक पुरस्कार

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर के एक छोटे से गांव ढाणी पांडूसर के रहने वाले लोकेश बिश्नोई को फ्रांस सरकार ने श्रेष्ठ साहित्यिक आलोचक का पुरस्कार देने की घोषणा की है। इसकी जानकारी फ्रांसिसी दूतावास के ऑफिशियल इंस्टाग्राम पेज पर जारी की गयी। गौरतलब है कि उन्हें यह पुरस्कार फ्रांस के प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित कृति 'ला पल्स सक्रेत मेमुआर देस होम' की आलोचना के लिए मिला है।

इस पुरस्कार की दौड़ में 37 देशों के लेखकों ने आलेख दिए थे लेकिन पुरस्कार की जूरी ने लोकेश बिश्नोई के आलेख का चयन किया। इस उपलब्धि के साथ एक और उपलब्धि यह भी जुड़ गई है कि लोकेश बिश्नोई इस साल नवंबर में पेरिस में होने वाले 'गोनकूर साहित्य पुरस्कार' वितरण समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। इससे पहले वे इस साल हुए गोनकूर चॉइस ऑफ इंडिया पुरस्कार की जूरी के सदस्य भी रहे हैं। लोकेश इस उपलब्धि का श्रेय अपने पिता विजयकुमार, सूरत के डिप्टी कमिश्नर महेंद्र कुमार गोदारा और जेएनयू दिल्ली से शोध कर रहे अपने सीनियर देवीलाल गोदारा को देते हैं। लूणकरणसर तहसील के ढ ाणी पाण्डूसर गांव के लोकेश ने अपनी प्राइमरी एज्यूकेशन राजस्थान में ली और आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली के प्रसिद्ध जवाहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय के भाषा केंद्र में प्रवेश लेकर फ्रांसिसी भाषा और साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई जेएनयू दिल्ली से ही की। हालांकि पीएचडी में भी उनका चयन जेएनयू और हैदराबाद के इफ में हुआ लेकिन आगे पीएचडी में नवाचार करने के लिए उन्होंने हैदराबाद के अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (ईएफएलयु) को चुना।

अनदेखी के चलते धुंधला रहा है चिड़ावा की हवेलियों में समाया इतिहास

चिड़ावा, (निसं)। इतिहास को समाये चिड़ावा की प्राचीन हवेलियों के मालिक कमाने के लिए बाहर निकले और फिर प्रवासी ही बन गए। एक-दो हवेलियों को छोड़ कर ज्यादातर हवेलियां ऐसी है जिनकी सार-संभाल नहीं हो रही। ऐसे में वे जर्जर हो चुकी हैं और गिरने के कगार पर हैं।

इन हवेलियों में सैकड़ों साल का इतिहास समाया है। इनमें ज्यादातर हवेलियां 100 से 200 साल तक पुरानी है। इन हवेलियों को उस समय परिवार की स्थिति और शाही अंदाज दिखाने के लिए सेठ-साहूकारों द्वारा बनवाया गया था। एक दौर ऐसा था जब शानो-शौकत दिखाने का जरिया ये हवेलियां बन गई । जब सेठ-साहूकार इन हवेलियों से बाहर निकलते थे तो उनका अंदाज भी शाही रहता था।

हवेलियों की बनावट उस समय सामूहिक परिवार की अवधारणा को लेकर किया गया था। एक हवेली में कई कमरे होते थे। इन कमरों की ऊंचाई भी करीब 15 से 20 फुट रखी गई। हवेलियों में शाल के पेड की लकडियों को गाटर की जगह काम में लिया गया है। प्राचीन हवेलियों की खासियत उनके बाहर खास शैली में की गई चित्रकारी भी है। माटी से बनाए गए कलर से की गई फ्रेस्को पेंटिंग आज भी कई हवेलियों पर कायम है। इनमें भारत के पौराणिक इतिहास से लेकर राजा-महाराजाओं के समय को भी उकेरा गया है। ज्यादातर हवेलियों के मालिकों ने व्यापार के लिए बाहरी इलाकों का रुख किया। कोलकाता, मुंबई, हैदराबाद, दिल्ली सहित देशभर में विभिन्न इलाकों में उद्योग धंधे स्थापित कर यहां के उद्योगपतियों ने काफी नाम क्षेत्र का किया है।

प्राचीन इतिहास से रूबरू करवाने वाली हवेलियों के साथ ही कई मंदिर भी स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने हैं। लेकिन ये भी फिलहाल अनदेखी के चलते धीरे-धीरे इतिहास में समाते नजर आ रहे हैं। भूमाफिय द्वारा कुछ हवेलियों को तो तोड़ भी दिया गया है। सरकार प्रवासीजनों से बात कर इन हवेलियों की देखरेख का जिम्मा लेकर इन्हें पर्यटन स्पॉट के रूप में काम में ले सकती है।

राशिफल शनिवार 2 जुलाई, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, आश्लेषा नक्षत्र रविवार प्रातः 6:30 तक, हर्षण योग दिन 11:32 तक, गर करण दिन 3:18 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। भद्रा रात्रि 4:12 से रविवार सांय 5:07 तक है। बुध मिथुन राशि में प्रातः 9:42 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:23 से 9:06 तक। चर 12:31 से 2:13 तक, लाभ-अमृत 2:13 से 5:38 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:21

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में अत्याधिक व्यस्तता अभी बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

सिंह
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कन्या
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक कारणों से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत का संविधान विश्व के सभी संविधानों की प्रमुख विशेषताओं को समेटे हुए पूरी तरह भारतीयता के रंग में रंगा हुआ है। जिसमें नागरिकों को समानता और सह-अस्तित्व की गारण्टी देकर, भारत को प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित करता है।

24 मार्च, 1946 को कैबिनेट मिशन भारत आया और मिशन की योजना के आधार पर संविधान सभा की स्थापना हुई। संविधान सभा के लिए डॉ. अम्बेडकर भी निर्वाचित हुए। 29 अगस्त, 1947 को संविधान प्रारूप समिति बनी। जिसके चेयरमैन डॉ. अम्बेडकर को बनाया गया। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई, 1947 को पारित कर दिया तथा 3 जून 1946 से संविधान सभा ही भारत की प्रथम संसद बनी। 15 अगस्त 1947 को भारत एक स्वतंत्र एवं संप्रभुता-सम्पन्न राष्ट्र बन गया।

जुलाई 1947 में पं. नेहरू ने सरदार पटेल एवं एस.के. पाटिल से सलाह मशविरा करके डॉ. अम्बेडकर को अपनी कैबिनेट में विधि मन्त्री बनाने का प्रस्ताव रखा, जो कि उन्होंने स्वीकार कर लिया। हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया। हालांकि संघीय भारत के काफी बड़े हिस्से में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे थे। 29 अगस्त, 1947 को संविधान सभा ने स्वतंत्र भारत के संविधान मसौदा निर्माण समिति के नामों की घोषणा कर दी थी। जिसमें कि डॉ. अम्बेडकर को प्रारूप समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

सदस्यों में सर अल्लादी कृष्णास्वामी, सर बी.एन.राय, श्री सैय्यद एम. सादुल्लाह, सर एन. गोपालस्वामी आयंगर, डॉ. के.एम. मुंशी, सर बी.एल मित्रर तथा श्री डी.पी. खेतान चुने गये। इस प्रकार मसौदा समिति में कुल आठ सदस्य थे। इसके बाद डॉ. अम्बेडकर भारत के संविधान प्रारूप निर्माण कार्य में पूरी तरह व्यस्त हो गये। 29 अगस्त 1947 से लगातार संविधान निर्माण के महति कार्य को बड़ी लगन, उत्साह एवं बुद्धिमता से दिन-रात करते रहे, तथा 16 फरवरी 1948 तक 171 दिन में संविधान का प्रारूप तैयार कर दिया।

संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को अन्तिम रूप से स्वीकार कर पास कर दिया गया तथा 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया।संविधान की प्रस्तावना में घोषणा की गई है कि "हम भारत के लोग, भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी , धर्म निरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्र प्रतिष्ठा और अवसर की समानता प्राप्त कराने के लिए और उन सभी में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता को सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर आज दिनांक 26 नवम्बर 1949 को इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मर्पित करते हैं। संविधान की प्रस्तावना वर्तमान समाज में अन्तर्निहित सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्तों के विकास का सार प्रस्तुत करती है।

25 नवम्बर, 1949 को डॉ. अम्बेडकर जो कि इसके मुख्य निर्माता थे, तीसरे पठन के बाद संविधान सभा में इस पर बहस का जवाब देने के लिए खड़े हुए। उन्होंने कहा मैं केवल दलित जातियों के हितों के लिया आया था। हैरत हुई, जब मुझे संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी का चैयरमैन चुना गया। प्रसन्नता हुई कि मुझे देश की सेवा करने का एक अवसर मिल गया है । 26 जनवरी, 1950 को संविधान को लागू करके देश पूर्ण स्वतन्त्र होगा । क्या भारत की जनता, अपने मत, मजहब या स्वार्थ की अपेक्षा देश को अधिक महत्व देगी। अपने रक्त की अन्तिम बूंद देकर भी हमें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने अपने चालीस मिनिट के सारगर्भित भाषण में भारत की समस्त जनता से स्पष्ट शब्दों में अपील की, कि सच्चे अर्थों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से जाति व्यवस्था को खत्म कर दो।

यादरामसिंह यादव

पूरी संविधान सभा जिसमें प्रधानमंत्री पं. नेहरू भी उपस्थित थे, ने शान्तिपूर्वक सुना और जब भाषण खत्म हुआ तो सभी सदस्यों ने तालियां बजाकर उनका आभार व्यक्त किया। डॉ. अम्बेडकर ने भारत की जनता को सावधान करते हुए कहा कि 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू करके देश पूर्ण स्वतन्त्र होगा लेकिन राजनीति में हम एक व्यक्ति एक वोट तथा इसकी एक वैल्यू को महत्व देंगे। परन्तु सामाजिक व आर्थिक जीवन में हम एक व्यक्ति एक वैल्यू को अस्वीकार करेंगे। डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा के सदस्यों की शंकाओं का जवाब, हर विषय पर बडी विद्वतापूर्वक दिया।

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. अम्बेडकर के कार्य से प्रभावित होकर संविधान सभा में बोले, डॉ. अम्बेडकर को कानून, समाजशास्त्र तथा आर्थिक क्षेत्रों में हमारे देश के इतिहास, मानव विज्ञान व संसार के संविधानों की उत्पत्ति व विकास के विशाल ज्ञान पर अधिकार है।

भारत ही नहीं विश्व के प्रमुख समाचार पत्रों ने एवं देश के बुद्धिजीवियों तथा संविधान सभा के सदस्यों ने डॉ. अम्बेडकर के संविधान प्रारूप निर्माण कार्य की भूरि-भूरि प्रसंशा की। उन्हें आधुनिक मनु की तथा बीसवीं सदी के स्मृतिकार एवं संविधान के शिल्पकार की उपमाओं से अंलकृत कर सम्मान दिया। संविधान प्रारूप सम्बन्धी कार्य के लिए सर्वप्रथम संविधान सभा के विशेषज्ञ सर अल्लादी कृष्णास्वामी आयंगर ने कहा कि मेरे मित्र डॉ. अम्बेडकर ने जिस योग्यता और कुशलता के साथ संविधान को प्रस्तुत किया और प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो अथक परिश्रम किया उनके लिए मेरे मन में बहुत प्रशंसा भाव है।

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि दिन-प्रतिदिन की कार्यवाही को इस कुर्सी पर बैठे-बैठे देखते हुए मैं यह महसूस करता हूँ कि इतनी लगन, श्रद्धा एवं उत्साह से खराब स्वास्थ्य के बावजूद भी प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. अम्बेडकर ने जो कार्य किया है, उतना इस कमेटी के किसी भी सदस्य ने नहीं किया है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने भारत के संविधान निर्माण कार्य में सबसे प्रमुख भूमिका निभाई है। उन्होंने इतना कठोर श्रम किया एवं सावधानी बरती है उतनी कोई नहीं कर सकता। नेहरू जी अकसर उन्हें कैबिनेट का हीरा कहकर पुकारते थे।

11 जनवरी 1950 को बम्बई दलित जाति फैडरेशन ने डॉ. अम्बेडकर का स्वर्णपात्र में संविधान की प्रति भेंट करते हुए भारी सन्मान किया। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि पिछले 20 सालों से सवर्ण हिन्दुओं तथा कांग्रेसी नेताओं ने मुझे मुस्लिम समर्थक, ब्रिटिश समर्थक तथा हिन्दु धर्म का विनाशक एवं स्वतन्त्रता विरोधी-नेता, कहकर निंदित किया है। मुझे आशा है कि मेरे संविधान के निर्माण कार्य से मुझे वे सही रूप में समझने में समर्थ होंगे और उन आरोपो को तिलांजलि देंगे जिन्हें वे मुझ पर लगाते आये हैं।

5 जून 1952 को अमेरिका की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी द्वारा संसार के सवोत्तम संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर को डॉक्टर ऑफ लाज की उपाधि देकर सम्मानित किया गया। अमेरिका वासियों ने इससे पूर्व डॉ. अम्बेडकर को भारत का बुकरिटी-वाशिंगटन का सम्मान प्रदान किया था।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर को श्रद्धांजलि स्वरूप उनकी आदमकद प्रतिमा 'संसद-भवन' नई दिल्ली के प्रांगण मे स्थापित की गयी। वर्ष 1990 में बाबा साहब को राष्ट की सेवाओं के लिए 'भारत रत्न' के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से उनके मरणोपरान्त उनकी पत्नी को देकर सम्मानित किया। डॉ. अम्बेडकर द्वारा किये गये देशहित में उनके महान कार्यों को कभी भुलाया ना जा सकेगा। भारत की जनता उनकी हमेशा के लिए ऋणी रहेगी।

यादरामसिंह यादव,
स्वतंत्र लेखक एवं वरिष्ठ साहित्यकार